महाविदेह एवं सीमन्धर स्वामी

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

वर्तमान समय में पन्द्रह महाविदेह क्षेत्र हैं। यहां हम नहीं पहुंच सकते। कोई ज्ञानी पुरुष ज्ञान के द्वारा हमें वहां ले जा सकता है। जम्बू द्वीप के चारों ओर अष्ट योजन ऊँची और उसके चारों दिशाओं में चार द्वार हैं। पूर्व में विजय, दक्षिण में वैजयन्त, पश्चिम में जयन्त ओर उत्तर में अपराजित है। दक्षिण वैजयन्त द्वार से उत्तर में हिमवान पर्वत तक विस्तृत अर्द्धचंद्राकार भरत क्षेत्र है।

भरत के मध्य भाग में पूर्व–पश्चिम लम्बा वैताढ्य पर्वत है। वह पचास योजन चौड़ा और पच्चीस योजन ऊँचा है। उस पर्वत में आर–पार अधंकारमय दो गुफाएं है। पूर्व में खण्ड प्रपात गुफा है और पश्चिम में तमिस्रा गुफा है। गुफाओं में गंगा सिन्धु से मिलती हुई उन्गाम्नजला–निमग्नजला दो नदियां हैं। उन्मग्नजला नदी में तृण काष्ठ मृतकलेवर या अन्य अशुचि पदार्थ जो आकर गिरते हैं वह उनको तीन बार घुमाकर शीघ्र बाहर फेंक देती है। निमग्नजला नदी उन गन्दे पदार्थों को अन्दर बैठा देती है। दोनों ही नदियों का पानी बहुत ज्यादा निर्मल रहता है।

दस योजन ऊपर जाने के बाद वैताढ्य पर्वत पर पर्वत जितनी लम्बी विद्याधरों की दो श्रेणियां हैं। दक्षिण श्रेणी में गगन बल्लभ आदि पचास नगर हैं और उत्तर श्रेणी में रथनेपुर आदि साठ नगर हैं उनमें रोहिणी, प्रज्ञप्ति, आकाशगामिनी आदि विद्याओं के जानकार मनुष्य रहते हैं जो विद्याधर कहलाते हैं। वहां से दस योजन ऊपर आभियोगिक देवों की दो श्रेणियां हैं। उनमें शक्रेन्द्र के लोकपालों के आज्ञानुवर्ती दस प्रकार के जृम्भक देवों का निवास है ये लोकपालों की आज्ञानुसार त्रिकाल जम्बू द्वीप में भ्रमण करते हैं और क्रमशः अन्न, पानी, वस्त्र, सुवर्णादि धातु, मकान, पुष्प, फल, विद्या व सर्वसाधारण वस्तुओं की रक्षा करते हैं। ये देव व्यंन्तर जाति में आते हैं।

भरत क्षेत्र में छः खण्ड हैं। इसके मध्य में वैताढ्य आ जाने से भरत क्षेत्र के दक्षिण भरत और उत्तर भरत ऐसे दो भाग हो जाते हैं। उत्तर सीमान्त हिमवान पर्वत के पद्मद्रह से निकली हुई गंगा, सिन्धु वैताढ्य पर्वत के बीच से निकलकर लवण समुद्र में मिलती है। इस कारण भरत क्षेत्र के छः विभाग बन जाते हैं। ये विभाग षटखण्ड कहलाते हैं। इन छहों क्षेत्रों में यौगलिक मनुष्य रहते हैं। हेमवन्त, हैरण्यवत में अवसर्पिणी काल के तीसरे आरे जैसी रचना है। हरि, रम्यक् में दूसरे आरे जैसी रचना है और देवकुरू उत्तरकुरू में पहले आरे जैसी रचना है।

महाविदेह क्षेत्र पूर्व–पश्चिम लाख योजन लम्बा है और उत्तर–दक्षिण तैंतीस हजार छः सौ चौरासी योजन चौड़ा है। इसमें सदैव चौथे आरे जैसी रचना रहती है। इसके बीच में मेरू पर्वत के आ जाने से यह पूर्व महाविदेह और पश्चिम महाविदेह ऐसे दो भागों में बंट गया है। पूर्व महाविदेह में सीता नदी और पश्चिम महाविदेह में सितोदा नदी के आने से इसके दो–दो भाग होने से उस क्षेत्र के चार भाग हो जाते हैं। एक–एक भाग में आठ–आठ विजय हैं। अतः बत्तीस विजय हो गये। प्रत्येक विजय में भरत क्षेत्र के समान छः–छः खण्ड होते हैं।

जम्बू द्वीप की जगती के बाहर चुड़ी के आकार में चारों ओर से घिरा हुआ दो लाख योजन चौड़ा लवण समुद्र है। वह चारों ओर किनारे पर बालाग्र जितना गहरा है। आगे क्रमशः गहराई में बढ़ता–बढ़ता पिचानवें हजार योजन जाने पर दस हजार योजन चौड़े क्षेत्र में सत्रह हजार योजन ऊंचा पानी है अर्थात समभूमि भाग से एक हजार योजन गहरा है। सोलह हजार योजन ऊंचा है उसे दगमाला कहते हैं। उस दगमाला को एक लाख चौहत्तर हजार नागकुमार जाति के व्यक्ति घेरे हुए हैं।

भरत क्षेत्र में अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल होता है। आधे कालचक्र में तीर्थंकर उत्पन्न होते हैं। अवसर्पिणी काल में ह्रास होता है, समय का भी ह्रास होता है। पंचभूतात्मक पदार्थों में भी समय के साथ परिवर्तन होता है। पहले आरे में जन्म लेने वाले व्यक्ति की आयु करोड़ों वर्ष होती है उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति कल्पवृक्ष से हो जाती है। वे कन्द मूल खाते हैं। वहां यौगलिक व्यवस्था रहती है। तीन कोड़ा–कोड़ी का दूसरा आरा होता है। इसमें आवश्यकताओं की वृद्धि धीरे–धीरे होने लगती है। तीसरा आरा इससे अधिक होता है। यौगलिक व्यवस्था तीसरे आरे तक चलती है। चौबीस तीर्थंकर अवसर्पिणी में और चौबीस तीर्थंकर उत्सर्पिणी में

जन्म लेते हैं। छठे आरे में सृष्टि का विनाश होगा। सर्वत्र जंगलराज हो जायेगा। जिसके पास शक्ति होगी वही शासन करेगा। बड़ी मछली छोटी मछली को निगल जायेगी।

अभी पांचवां आरा चल रहा है। पृथ्वी का ऊपरी भाग महाविदेह क्षेत्र है। सीमन्धर स्वामी भगवान महाविदेह में ही रहते हैं। कम से कम नव तीर्थंकर वहां विराजते हैं। वर्तमान में भरत क्षेत्र को देखने वाले सीमन्धर स्वामी वहां विराजते हैं। दादा भगवान जैसे स्वामी पद्मावती जैसे शुद्ध आत्मा वाले व्यक्ति ही उनका दर्शन कर सकते हैं।

महाविदेह क्षेत्र में सीमन्धर स्वामी का निवास है। जो शुद्ध आत्मा है वह यहां वास करती है। पुण्य कर्म के पश्चात् ही महाविदेह में जीव जाता है।